हमारी बात

समय-समय पर हम अपने पाठकों के पत्र प्रकाशित करते रहे हैं। कुछ गांवों की बहनों ने मिल कर 'सबला' के लेखों और कहानियों पर बातचीत की। उनकी राय भी हमने छापी। इन सबके ज़रिए हमें उनकी सोच का पता लगता है। अपनी सार्थकता या कमियों का अहसास होता है।

कई बार हमारी बहनों को लगता है कि यह सब पढ़ने में बहुत अच्छा है पर करना आसान नहीं। बिल्कुल ठीक! संघर्ष का रास्ता कभी भी आसान नहीं होता। पर उसका यह मतलब नहीं कि वह असंभव है। 'सबला' के लेखों के कई पात्र हमारे आपके जैसी हाड़ मास की इंसान हैं। कब, कौन, किस घड़ी में इरादों और विश्वासों की ताक़त पैदा कर पाएगी यह कहा नहीं जा सकता।

यह बात सौ पैसे सच है कि जब बलात्कार की शिकार औरत पुलिस थाने या अदालत जाती है तो उसका रास्ता कांटों से भरा होता है। खुलेआम उसके चाल-चलन पर शक किया जाता है। दस में से नौ मामलों में मुकदमे बरसों चलते रहते हैं। औरत को सिवाए बदनामी और दुख के कुछ नहीं मिलता। पर हमें याद रखना चाहिए वह एक मामला जिसमें अपराधी को सज़ा मिलती है, उससे न्याय का रास्ता खुलता है। लोगों की सोच और रवैया थोड़ा ही सही, कुछ तो बदलता है।

आज अगर दस में से एक को न्याय मिलता है तो वह दिन भी आएगा जब दस में से नौ को न्याय मिलेगा। आज न्याय न पाने वाली दुख, बदनामी और बेइज्जती उठाने वाली हर अनाम औरत इस संघर्ष के लिए जलने वाली एक मशाल है। जिससे रौशन होंगे रास्ते हमारी बेटियों के, उनकी बेटियों के। क्या हुआ अगर हम अपनी जिंदगी में वह दिन न भी देख पाएं। अन्याय के आगे डट कर खड़े होने का संतोष लेकर तो जिएंगी।

वीणा शिवपुरी